'विदेह' १७७ म अंक ०१ मई २०१५ (वर्ष ८ मास ८९ अंक १७७)

ऐ अंकमे अछि:-

राम विलास साहु- किछु विहनि कथा/ तीनटा लघु कथा- गंगा नहाएब/ डोमक आगि/ स्वर्गक सुख

राम विलास साहु- किछु विहनि कथा

मिथिलाक माटिमे पसरल कहबी- संकलनकर्ता- राम विलास साहु

राम विलास साहु- टनका

राम विलास साहु- किछु विहनि कथा

स्कूलक खिचड़ी

एकटा अभिभावक तमसा कऽ स्कूल पहुँचला। हेड मास्टरकेँ उपराग दैत बजला-

> “पढ़ाइ-लिखाइ तँ जएह-सएह होइए। खाली खिचड़ीयेमे बेहाल रहै छी। जखनि धिया-पुता पढ़बे नै करतै तखनि तँ हाकिम-हुकुमक तँ बाते छोड़ू चपरासियो नै बनतै। एसँ नीक तँ प्राइवेटे स्कूल ने जइमे दूटा पाइये ने लगै छै, पढ़ाइ तँ नीक होइ छै। आइ तक ऐ स्कूलक बच्चा पढ़ि कऽ कोन नाम कमेलकै।”

मास्टर सहाएब शान्त भावसँ अभिभावककेँ समझबैत बजला-

“देखू, तमसाउ नै कोनो हम खिबै छी खिचरी। ई तँ सरकारक योजना छी। ऐ योजनासँ लाभो बहुत छै। निच्चासँ ऊपर धरि सभ माले-माल होइ छै।”

अभिभावक बजला-

“से केना?”

मास्टर सहाएब कहलखिन-

“सहीमे प्राइवेट स्कूलक बच्चा सभ पढ़ि-लिखि हाकिम-हुकुम बनै छै। आ ईहो देखैत हेबै जे ओ सभ माए-बाप, गाम-समाजकेँ छोड़ि एवं मातृभूमिकेँ बिसरि जाइए, बूझू बौर जाइए। से तँ ऐ स्कूलक बच्चामे नै हाेइए।”OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

चोर-सिपाही

माघ मास अन्हरिया राति। ओस-कुहेससँ हाथो-हाथ ने सुझैत। एकटा चोर चारि कऽ भागल जाइ छल। तखने एकटा सिपाही गस्तीमे आबि रहल छल। चोर सिपाहीकेँ देखिते भागल। चोर बूढ़ छल मुदा सिपाही बलंठ छलै। भागैत चोरकेँ रपटि कऽ पकड़लक सिपाही। पकड़ि हाजति लेने जाइ छल।

चोरकेँ डंढ़ासँ देह थरथराइ छल। मने-मन ईहो सोचै छल जे केना ऐ यमराजक हाथसँ बचब। थोड़े आगू चलि कऽ देखल जे सड़कसँ हटि एकटा घूर रहै। आगि देखिते चोर बाजल-

"सर, अहाँ एत्तै रहू आ हम ओइ धूरासँ कनी बिड़ी नेसने अबै छी?"

सिपाही कने सोचि कऽ बाजल-

"अरे, तूँ हमरा मूर्ख बुझै छेँ रे! आ जे तूँ भागि जेमे तँ हम तोरा पतालमे खोजबौ? चूपचाप एतए बैस हम अपनेसँ बीड़ी सुनगेने अबै छी।" OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

इमानदारीक पाठ

ननुआँ पुछलक कनुआँसँ-

"भैया आइ-काल्हि तँ गामोक स्कूलमे बड़ सुविधा भेटै छै आ पढ़ाइओ होइ छै तैयो विद्याथी सभ शहरक स्कलमे किए पढ़ै छै?"

कनुआँ जबाब देलक-

"गामक इस्कूलमे इमनदारीक पाठ आ शहरक इस्कूलमे रोजगारक पाठ पढ़बै छै।"

"से केना?" -ननुआँ पुन: पुछलक।

कनुआँ उत्तर देलक-

"गामक इस्कूलमे एहेन पाठ पढ़बै छै जे कहुना साक्षर भऽ जाए, गाए-भौंस चराबए आ नमहर भेलापर हर-फार जोतए, खेती करए। अन्न उपजा कऽ अपनो खाए आ आनोकेँ खियाबए। ई छिऐ ने इमानदारीक पाठ मुदा शहरक इस्कूलमे विद्यार्थी सभकेँ रोजगारक पाठ पढ़बै छै। ओ सभ पढ़ि-िलखि रोजगार लेल आन-आन शहर चलि जाइ छै। अपन घर-परिवार आ समाज सेहो छुटि जाइ छै। समाजसँ बेमुख भऽ जाइ छै। आब तोहीं कह जे इमानदारीक पाठ के पढ़तै?" ❍❍❍

बौआ बाजल

पढ़ल-लिखल बेरोजगार छी मुदा दिन केना कटै छल तकर कोनो सुधि-बुधि नै छल। ऊपरसँ परिवारक बोझ, आगू पढ़बाक इच्छा रहितो किछु नै कऽ सकलौं। एक दिन मनमे फुराएल जे किछु नेना-भुटकाकेँ पढ़ाएल जाए। अहुना तँ हम बुड़िआएले छी औरो बुड़िया जाएब।

एक दिन भोरमे बौआ-बुच्चीकेँ ओसारपर पढ़बै छलौं। दुनू बेरा-बेरी प्रश्न पुछए आ हम उत्तर दइ छेलिऐ। अहिना स्थितिमे बौआ पुछलक-

"लोक एत्ते मेहनतसँ किए पढ़ैए, जे पढ़ैए सेहो आ जे नै पढ़ैए ओहो तँ एक ने एक दिन मरिऐ जाइए?"

बौआकेँ हम समझबैत कहलिऐ-

"जीवन-मरण तँ प्रकृतिक निअम छी। ओ निरंतर होइत रहैत अछि।"

बौआ फेर पुछलक-

"तखनो लोक किए पढ़ैए?"

"मनुख पढ़ि-लिख ज्ञान अर्जित करैए आ ओइ ज्ञानसँ अपन जिनगीकेँ सुलभ बना असली जिनगी जीबैए। लोक पढ़ि-लिखि डाक्टर-इंजिनियर, औफिसर, कवि लेखक आ उपदेशक इत्यादि बनैए। अच्छा ई कहह जे तूँ की बनबऽ?"

बौआ बाजल-

"हम पढ़ि-लिख कोनो काज कऽ सकै छी मुदा कवि-लेखक नै बनब। सभ कमा कऽ सुख-मौजसँ जिनगी बितबै छथि मुदा कवि-लेखककेँ कोनो कमाइ नै होइत छन्हि। अखबारमे पढ़लिऐ जे मरला बाद पुरस्कार भेटै छै।"

OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

घूसहा घर-

मुखियाजी पंचायतक गामे-गाम आम सभाक बैसार लेल डोल्हो दियौलनि। गामक लोक सभ एकजुट भऽ आम सभामे पहुँचला। सभाकेँ संवोधित करैत मुखियाजी बजला-

“ऐ बैसारमे सभ कियो मिल िनर्णए लिअए जे पंचायतक गरीब आ मसोमात, जिनकर घर टुटल-फाटल होइ वा रहबा योग नै होइ छै। ओइ व्यक्तिक सूची बनाएल जाउ। हुनका सभकेँ सरकार तरफसँ घर बनबैले इन्दिरा-आवास योजनासँ रूपैया भेटतनि।”

वार्ड सदस्यक सहयोगसँ मुखियाजी लग इन्दिरा आवासबला सूची पहुँचल। बिहानेसँ मुखियाजीक दलाल सभ सूचीमे नामांकित व्यक्तिसँ भेँट कऽ एक-एकटा फार्म दऽ कहि देलक जे फार्म भरि कऽ मुखियाजी लग जमा करै जाउ आ बैंकमे खाता सेहो खोलबा लइ जाउ। संगे संग पाँच हजार रूपैआ सेहो दिअए पड़त। तखनि इन्दिरा आवास भेटै जाएत।

बहुत गोटे तँ अपन गाए-महिंस-बकरी-छकरी-गहना-जेबर जेकरा जे गर लगलै बेचि कऽ रूपैआ दऽ रूपैआ उठेलक। किछु आदमी एहनो छल जेकरा सकर्ता नै भेलै ओ वंचित रहि गेल। बदलामे पाइबला लोक अपना नामे उठा लेलक।

किछु दिनक बाद रघिया मसौमात इन्दिरा-आवास ले फार्म भरि मुखिया जी लग पहुँचलीह। मुखियाजी फार्म पढ़ि बजला-

“पहिले इन्दिरा आवासमे पचीस हजार भेटै छलै आब चालिस हजार भेटै छै मुदा आगू भेटैबला साइठ हजार भेटतै। जइमे पच्चीसमे पाँच हजार आ अखनि चालिसमे दस हजार खर्चा लगै छै मुदा आगू साइठमे पनरह हजार लगतै।”

रधिया सुनिते कानि-कलपि कऽ अपन मजबूरी सुनौलकनि। मुखियाजी मुड़ी डोलबैत बजला-

“यइ काकी, हमरे केने नै ने होइ छै, डेगे-डेग हाकिम-हुकुम बैसल छै। ओहो तँ कटिया सोन्हा कऽ रखने रहै छै तेकरा की हेतै। आ हमरो कोनो दरमाहा भेटै छै हमहूँ तँ ओहीमे निमहै छिऐ। तँ ई हेतौ जे हम अपनबला नै लेबो।”

सुनि रधिया सभ बात सुनि परिस्थिति बूझि आपस आबि गेलीह।

बुधनी बुढ़िया गाममे सभसँ उमेरगर। जुआनियेमे घरबला बाढ़िमे डुमि मरि गेलखिन। दूटा बेटाक संग बुधनी कहियो हिम्मत नै हारलि। संघर्ष करैत आत्म-िनर्भरतापर धियो-पुतोकेँ सक्कत बनौने छथि। हलाँकि आर्थिक रूपे कमजोरे छथि।

एक दिन मुखियाजीक नजरि बुधनी बुढ़ियापर पड़लनि आ देखिते पुछलखिन-

“गामक बहुतो लोक सभ लाभ लेलक मुदा तूँ कोनो फारमो नै भरलीही? तोरा तँ दूटा लाभ भेटतौं। एकटा वृद्धा-पेंसन ओ दोसर इन्दिरा आवासक।”

बधनी बजलीह-

“ऐमे कोनो खर्चो-वर्चो लगैए?”

मुखियाजी-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"हँ, वृद्धा-पेंसनमे पाँच सए आ इन्दिरा-आवासमे पनरह हजार।"

बुधनी-

"हम ई लाभ नै लेब।"

मुखियाजी-
"किए नै लेब?"
बुधनी-

"घूस दऽ कऽ घर बनाएब तँ ओइ घूसहा घरमे रहैबला केहेन हेतै?"

मुखियाजी आ बुधनी बुढ़ियाक गप अपना घरक कोनचर लगसँ रधिया मसोमात सुनैत छलीह अपना मनकेँ बुझबैत बजलीह-

"इन्दिरा आवास किए घूसहा घर कहियो ने।"ooo

ISSN 2229-547X VIDEHA

जातिक भोज

आइ फूलबाबूक बेटाक बिआहक भोज अछि। गौआँ सबहककेँ आशा छेलनि जे ई भोज हमरो सभकेँ खेबाक अवसरि भेटत। किएक तँ ऐ भोजकेँ सफल बनेबाक लेल बहुतो जाति-वर्गक लोकक सहयोग छेलनि। कियो जारनि फारए तँ कियो साफ-सुथरा करए। कियो बर्तन-बासन माजै छल। गामक डोम बाँससँ बनल छिट्टा-पथिया, ढकैस, डाल-दौरा, चङेरा बना देलक। मालि फूल आ फूलक माला, कुमहार वर्तन-वासन, महला पोखरिसँ माछ मारि मनक मन ढेर लगौलक। कतेको करीगर आ हलुआइ सभ भोजक समग्री बनबैमे भिरल छल। भोजमे सहयोग तँ सभ जातिक लोक द्वारा भेल। मुदा खाइक अवसर सभकेँ नै भेटलनि। ओतबे नै, किनको नगद टाका देल गेल तँ किनको उधार रहलै आ किनको सीदहा भेटलै। मुदा भोज खाइक नोत सभकेँ नै भेटलै।

भोजक आयोजक भलहिं फूलबाबू छला मुदा करबारी तँ सभ जातिक लोक छेलखिन। किछु लोकक मनमे, जिनका सभकेँ नोत नै देल गेलनि। हुनका सबहक मनमे ईहो होन्हि जे काज जखनि नै छुआइ छै तँ पाँतिमे बैस खेलापर पाँति केना छुबा जेतै।❍❍❍

ISSN 2229-547X VIDEHA

शिक्षाक महत

जीबछ घरजमैया छल। हुनकर पत्नी रधिया, माए-बापक एकलौती बेटी बड़ दुलारि छलि। रधियाक पिताकेँ चारि बीघा चास-बास, कलम-बाँस आ गाए-बड़द छल। खेती-बाड़ीसँ जिनगी चलै छेलनि। सोझमतिया रहने कोनो क्षल-कपट नै रहनि। पितमरू छला। परिवारमे अक्षरक बोध केकरो नै रहनि खाली जीबछ ट-ब कए कऽ साक्षर छल। रधियाक पिता जरूरति पड़लापर जखनि समाजमे कोनो लेन-देन करै छला तँ औंठेक निशान दइ छला।

एक साल एहेन समए भेलै जे इलाकाक इलाका बाढ़ि-पानिसँ दहि गेलै। ने नेवान करैले अन्न आ ने दाँत खोदहैले नार-पुआर भेलै। दोसर साल रौदी भऽ गेलै। एक तँ बाढ़िक मारल, दोसर रौदीक जरल। गरीब-गुरबाकेँ गुजर कटनाइ पहाड़ भऽ गेलै। केतेको परिवार तँ आन-आन गाम अपन-अपन कुटुमैती जा किछु दिन समए कटकल। मुदा ई सुविधा सबहक नशीव नै छेलै। गामक नम्हर जमीनदार, मालिक-गुमस्ता जे छला हुनका तँ पहुलके सालक पुरना अन्न बखारीक-बखारी भरल छेलनि। हुनका सभकेँ कोनो चिन्ता नै छेलनि। रधियाक माए-बाप बूढ़ रहने आन गाम जा केना काज करत। ओ दुनू गाममे मालिकसँ कहियो मरूआ तँ कहियो धान तँ कहियो छाँटी चाउर कर्जा लऽ समए काटै छल। कर्जा देनिहार मालिक सभ विपतिक समैमे गरीबक शोषण सेहो करैत। एक मन अन्नक बदला दू मन आ दोसर साल चुकेलापर तीन मनक करारीपर कर्जा लगबैत। तेकर बादो औंठाक निशान एकटाकेँ के कहए जे तीन-तीनटा छाप कागतपर लइ छेलखिन। गरीब अपन परान बँचाएत आकि छापक परबाह करत। कर्जा खेनिहार थोड़े बुझै छल कि छाप देबै कागतपर आ हमर जमीन जत्था चलि जेतै तक्खापर।

एक दू साल समए बितलै। जीबछ अपन सौसुराइरिएमे सासु-ससुरक सेवा आ खेती-बाड़ी कऽ गुजर-बसर करै छल। किछु समए पछाति सासु-ससुर मरि गेलखिन। श्राद्ध-कर्मसँ निवृत भेलै छल आकि गामक मालिक-गुमस्ता लोकनि अपन-अपन कागत लऽ जीबछ ऐठाम पहुँचए लगला। कर्जा तँ करारीपर देने रहनि। ओ अवधि बीति गेल छल। कर्जा खेनिहार पहिले कागतपर छाप देने रहनि। ओइ कागतपर मालिक-जमीनदार लोकनि जमीनक खाता-खेसरा रकबा लिखि कऽ अपन नाओं कऽ लेलनि। गरीब सबहक जमीन मालिक-गुमस्ता हरपि लेलकनि। जइमे रधियाक जमीन सेहो चलि गेल। आब जीबछ-रधियाकेँ दूटा बेटी, एकटा बेटा आ परिवारक भरन-पोषण करनाइ कठिन भऽ गेल। जीबछ कमाइ खातीर बाहर चलि गेल। बाहरमे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नोकरी जल्दीए होइ छेलै आ बेसी दरमाहा सेहो भेटै छेलै। जीबछ बेसी पढ़ल तँ नै मुदा साक्षर छल। जइसँ शिक्षाक महत जिनगीमे केतेक होइ छै से मोने-मन महशूस करै छल।

जीबछ ट-ब-ट काए कहुना कऽ चिट्ठी लिखि घर पठेलक। ओइमे बेटा-बेटीकेँ पढ़बैले रधियाकेँ प्रेरित करैत कहै छल जे पढ़ाइमे जेते खरच लगत, हम कमाए कऽ पठाएब मुदा अहाँ धिया-पुताकेँ पढ़बैमे कोनो कोताही नै करब। रधियो मोने-मन सोचै छेली जे नीक लोक बनबाक लेल शिक्षाक बड़ महत छै। जे हम आ हमर माए-बाप जँए नै पढ़ल छेलौं तँए ने सभटा जमीन मालिक-गुमस्ता हरपि लेलनि। जखनि पढ़ल रहितौं तँ ई मुसिबत नै अबिताए। हम सभ जे केलौं से केलौं मुदा धिया-पुताकेँ जरूर पढ़ाएब। अइले हमरा जे परिश्रम आ तियाग करए पड़त ओ करब। ओ सभ दिन अपन धिया-पुताकेँ समैपर संगे जा स्कूल पहुँचाबए लगली।

रधियाक टोलेमे बुच्ची बाबू छला। बुच्ची बाबू अंचलमे बाड़ाबाबू छथि। छुट्टीमे घर आएल छथि। हुनका काल्हि भोरे ट्रेन पकड़ि ड्यूटीपर जेबाक छेलनि से रधियाकेँ कहलखिन-

> “रधिया, किछु सामान अधिक अछि। गाममे कएक गोटेकेँ कहलिऐ जे काल्हि भोरके ट्रेन पकड़ब से कनी सामान स्टेशनपर पहुँचा दिअ, मुदा कियो तैयार नै भेल। तूँ कनी पहुँचा दइ। हम तोहर बड़ उपकार मानबो।”

ISSN 2229-547X VIDEHA

रधिया बाजलि-

"ठीक छै, कअए बजै चलब। कहि दिअ हम समान पहुँचा देब।"

बुच्ची बाबू बजला-

"सात बजे भाेरेमे चलब। किएक तँ आठ बजेमे ट्रेन छै। तीन-चारि किलो मिटर स्टेशन दूरो छै।"

रधिया भोरे उठि सभ काज कऽ जलखै बना धिया-पुताकेँ खाइले दऽ बजली-

"तँू सभ जल्दीसँ खो, आइ कनी पहिनहिए तोरा सभकेँ स्कूल पहुँचा दइ छियौ, तखनि बुच्ची बाबूक समान पहुँचबैले टीशन जाएब।"

एम्हर बुच्ची बाबू तैयार भऽ रधियाक बाट तकै छला। पाँच मिनट पछाति रधिया पहुँचली। बुच्ची बाबू तमसाइत बजला-

"रधिया, तोरा कहने छेलिओ साते बजै चलैले, देरी भऽ गेल। ट्रेन छूटि जाएत। तोरा कोनो चिन्ता नै।"

रधिया बजली-

"अपने तमसाउ नै। धीरे-धीरे बढ़ू हम समान लेने लफरल पिट्ठेपर आबि रहल छी। कनी धिया-पुताकेँ स्कूल पहुँचबैमे देरी लागि गेल।"

बुच्ची बाबू-

"पहिले सामान पहुँचा दइतैं, हमरा ट्रेन छूटि जाइत। एक दिन तोहर बेटा-बेटी स्कूल नै जेतौ तँ की हेतै। एक्के दिन कोनो पढ़ि कऽ कलक्टर बनि जेतौ?"

रधिया मोने-मन सोचए लगली, कहै छियनि आगू बढ़ैले से उठिए ने होइ छन्हि। हम तँ लफरल हिनकासँ पहिनहि पहुँच जाएब। ट्रेन थोड़े छुटतनि। अपने बेगरते आन्हर छथि। अनेरे गछलौं।ooo

ISSN 2229-547X VIDEHA

ई छी हमर मजबूरी

जमुना बाबाक दुआरिपर सतसंग-प्रवचन होइ छेलै। भीड़ देखि हमहूँ ससरि कऽ गेलौं आ बैस सुनए लगलौं। प्रवचनकर्ता सेहो ज्ञानी आ विद्वान बूझि पड़ला। ओ मनुखक जिनगीक समरूपता बतबै छला। कहब रहनि जे सभ मनुख एक समान छी। सभ एके ईश्वरक संतान छी आ सबहक अत्मामे एके परमात्माक अंश रमि रहल-ए। मुदा हम तँ बड़ अंतर देखै छी। सबहक क्रिया-कलाप, रहन-सहन आ खानो-पानमे बड़ पैघ भिन्नता अछि। केकरो बोरे-बोरे नून आ केकरो रोटीओपर ने नून। कोइ खाइते-खाइते मरैए आ कोइ खाइए बिनु मरैए। केकरो बीघा-बीघे कोठा-सोफा केकरो खोपड़ीओपर आफत। कोइ रौदे-वसाते जरि-मरि काज करैए तँ कोइ ए.सी.मे मौजु करैए। कियो उड़न जहाजसँ देश-विदेशक यात्रा करैए तँ कियो पएरे चलि-चलि सड़केपर पराण तियागैए। किनको बिमारीक इलाज करोड़ो रूपैआसँ विदेशमे होइए तँ किनको पराण साधारण इलाज बिनु चलि जाइए।

ऐ सभ मुद्दापर सोच-विचार करैत जखनि प्रवचन खतम भेल तखनि हम हुनका लग जा कहलिऐ-

"महराज, अपने प्रवचनमे सभ मनुखकेँ समरूप बतौलियनि। मुदा हम तँ बड़ अन्तर देखै छी। से कनी फड़िछा कऽ कहियौ।"

प्रवचनकर्ता मधुर स्वरमे बजला-

"से तँ ठीके अहूँ कहै छी। हम जे प्रवचनमे कहलौं सेहो ठीक आ अहाँ जे कहै छी सेहो ठीक। सत् ई छै प्राकृति द्वारा जे सुविधा मनुखक लेल उपलब्ध छै ओ समरूप छै। मुदा मनुखक बीचमे जे अन्तर छै से अन्तर बेवस्थामे कमीक कारणे छै। मनुखे मनुखक दुश्मन छिऐ। जे जेते सवल छै ओ ओते दोसराक हक मारि बेवस्थाकेँ दुरूपयोग करै छै। जहिना हाथीकेँ दूटा दाँत होइ छै एकटा खाइबला आ दोसर देखबैबला तहिना बेवस्था करैबलाकेँ दू नजरि होइ छै। कथनी आ करनीमे अन्तर रखने छै। ऐ सभ बातक विचार-अनुभव मनुखकेँ अपने करए पड़तै। ओकर समाधान लेल सघर्ष करए पड़तै। बिनु मांगने तँ भीखो नै मिलै छै। ई तँ अहाँ अधिकारक बात करै छी। जौं हम प्रवचनमे समरूपताक बात नै कहबै तँ बेवस्था हमरा नै ने जीबए देत। अहाँ जकाँ जौं हमहूँ प्रवचनमे बाजब तँ कहिया ने हमरा जमपुरी पहुँचा देने रहितए। यहए छी हमर मजबूरी।"OOO

बाल-बोध

दुखीलालकेँ दुखक पहाड़ माथसँ कहियो निच्चाँ नै भेल। बूढ़ माए-बापक सेवा टहल, तैपर सँ दूटा भलढ़ेरबा बेटी, छोट-छोट दूटा बेटा, पत्नी आ अपने कुल आठ बेक्तीक परिवार। पत्नी- फुलिया- परिवारक काजमे पिसाइत छेली। सासु-ससुरक टहल-टिकोरा आ सेवासँ पलखतिए नै। ऊपरसँ एकटा पोसिया गाए, एकटा भजैतिया बरद। मुदा दुनू बेटी चठेलगरि आ हुनरगरि छन्हि। घरक कमौआ दुखीलाल असकरे दिन-राति फिरिशान रहैए। घरक खर्चा पुग्बे ने करैए जे पलखति मारत। खेतीओ-पथारी कम्मे भेने जने-बुत्तापर घरक खर्चा चलैत अछि। जखनि खेनाइओ-पीनाइओमे ढनसने तखनि बेटा-बेटी पढ़त केना? बर्खक पेसतरे दुखीक माए लकबा रोगसँ मरि गेली। पछाति बूढ़ बाप सेहो रोगसँ रोगा-सोगा दम तोड़ि देलकनि। श्राध-कर्म आ भोज-भात कर्जे हाथे भेल।

दुखीलालकेँ एक-सबा कट्ठा डीह, तीन कट्ठा चौमास आ छह-सात कट्ठा तीन-फसिला खेत छन्हि। जइसँ छह मास परिवारक गुजर चलै छन्हि। जन-मजदूरी कऽ शेष छह मास बितबैत अछि। मुदा अखनि तँ चौमास आ तीन-फसिला खेत दस हजारमे डेढ़ा सूदिपर भरना लगि गेल अछि। तैपर सँ दूटा बेटीक बिआहक अलगे। दुनू बेटा अखनि बाल-बोध! समस्या-पर-समस्या लदल जा रहल अछि। जँ चारि-पाँच साल खेत-भरना रूपैआ आ सूदि नै भरब तँ खेतो सूदिए तरे चलि जाएत। गाए बिकल चरबाहियेमे कहबी सन हएत।

एक दिन दुखीलाल बैसारीए छल। किछु सोचैत छल आकि मनमे उपकलै खेतक भरना। जइ खेतसँ हमर बाप-दादा परिवार चलबै छला वएह खेत हमरो जीविका अछि। मुदा आब बूझि पड़ैए ओ खेत बिलटि जाएत। ऐ क्रममे सोचैत दुखीलाल टहलि मालिक प्रभूनाथजीक दरबज्जापर पहुँचल। प्रभूनाथजी दुखीकेँ देखिते कहलखिन-

"आबह दुखी, एमकी बहू दिनपर भेँट करए एलह।"

दुखीलाल-

"मालिक, अहाँसँ कथी छुपल अछि। एतेक दिनसँ माए-बापक कहुना रीन उतारलौं मुदा अपनेक रीन केना चुकाएब से फुड़ेबे ने करैए।"

प्रभूनाथजी-

"केना चुकेबऽ से तँ तोहर काज छिअ। तइले हम किए मगजमारी करब। साले-साले हमरा रूपैआक डौरहा सूदि बढ़ैत जेतह। पाँच सालक कराड़ी छह, नै चुकेबहक तँ खेत छोड़ह पड़तऽ।"

दुखीलाल-

"मा िलक, एना नै ने बाजू। खेतक नाओं सुनि हमर करेजा फाटि जाइए। ई खेत हमर खनदानक पूजी आ इज्जति छी। अपना जीबैत हम केना बिलटए देब।"

प्रभूनाथजी-

"से तँ तूँ ठीके कहै छह। रूपैआक सूदि जोड़ि चुकता कऽ दहक आ अपन खेत छोड़ा लैह।"

दुखीलाल-

"मालिक, अहींक दरबारमे जन-मजुरी कऽ जीब लेब। रहल अहाँक रूपैआक सूदि, तइ एबजमे हम अपन दुनू बेटाकेँ अहीं ऐठाम नोकरी राखि दइ छी। बँचलोहो बासि-बेरहट खा जीब लेत आ अहूँक काज

चलत। जाधरि अहाँक रूपैआक सूद-मूर नै सधत ताधरि अहींक दरबारमे नोकर बनि खटि देत। रूपैओक चुकता भऽ जाएत आ हमरो खेत छुटि जाएत।"

प्रभूनाथजी-

"कहलह तँ बड़ नीक। युक्तिओ तोहर नीमन छह मुदा... ।"

दुखीलाल-

"मा िलक 'मुदा' किए कहलौं?"

प्रभूनाथजी-

"मुदा ऐ दुआरे बजलौं कि तोहर बेटा दुनूकें तँ देखने नै छी। अबोध अछि आकि बाल-बोध "

दुखीलाल-

"बल-बोध अछि। ठेकनगरि, एकबेर सेरिया कऽ बता देबै तँ दोसर बेर अढ़बए नै पड़त। देखिते-देखिते फुर्र-फुर्र काज कऽ देत। एक्को मिसिया असकतिया नै अछि।"

प्रभूनाथजी-

"बेस काल्हिए दुनूकें बजौने आबह। नैनसँ देखियो लेब आ काज करै जोकर अछि कि नै सेहो ठेकानि लेब।"

दुखीलाल-

"बेस मालिक, जाइ छी काल्हिए दुनूकें संगे नेने अबै छी।"

दुखीलाल अपन कर्तव्यकें हीन बूझि चिन्तामे डूमि गेल। हम केहेन बाप छी जे बाल-बोध बेटाकें भोजन-बस्त्र-शिक्षा इत्यादि पूर नै कऽ अपने बेगरते नोकरी लगबै छी। बेटा-बेटी राजाक हुअए आकि गरीबक सभकें अपन सन्तान दुलरूआ होइ छै। जखनि नमहर-बुधिगर-ठकनगर हएत तँ की कहत! हमर बाप केहेन निष्ठुर छथि जे हमरा संगे एहेन अन्याय केलनि। मुदा हमरा लग रस्ते कोन अछि। दोसर कोन उपए लगा सकब। मोनक बात मोनमे रखैत हृदैकें सक्कत कऽ बिहाने भने पनिपिआइ करा संगे नेने प्रभूनाथजीक दरबार पहुँचल। दुनू बाल-बोध भाए गांगी-जमुनी, देखैओमे बड़ नुनुआगर, उमेरो आठ-दस बर्खक। प्रभूनाथ जीकें मनमे भेलनि बड़ नीमन टहलू हएत। मुदा अनठबैत बजला-

"दुखी दुनू बौआ तँ अखनि लेधुरिए अछि। हमरा ऐठाम कोन काज करत। ऐठाम तँ भीड़गर काज अछि।"

दुखीलाल बूझि गेल जे मालिक हमरा टाड़ि रहल अछि। बाजल-

"मालिक, छोट देखि झझुआउ नै। घरक छोट-छोट सभ काज करत। गाए-बरदक कुट्टी-सानी, दरबज्जा, माल-जालक बथान आ गोहाल घरक झार-बहार करत। गोबर-करसी ढुल-ढालकें हटाएत। अहूँकें कियो टहल-टिकोरा करैबला नै अछि सेहो अपन समझि करत। अहूँ अपने पोता सन बेवहार करबै। घरे ने बदलि जेतै मुदा रहतै तँ गामेमे। अहाँ लग रहत तँ हम निफिकिर रहब। ओना हमहूँ तँ अबिते-जाइते रहब।"

प्रभूनाथजी-

"दुखी, तँ ू ने गाम-घरक बात करै छह। लोक तँ शहर जाइले जान गमौने अछि।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

दुखीलाल-

"मालिक की कहब, लोक तँ चिड़ै भऽ गेल अछि। जेतै पेट भरै छै ओतै खोंता बना रहैत अछि।"

प्रभूनाथजी-

"से ठीके। हमरे बेटाकेँ नै देखै छहक। गाम-समाज छोड़ि हैदराबादमे रहैए। पावनि-तिहार तँ हम जाबै जीबै छी ताबे कहुना कऽ दइ छिऐ, नै तँ घरक देवताकेँ एक चुरुक पानिओ के देत।"

दुखीलाल-

"मािलक, छोड़ू दुनियाँ-दारीक गप-सप्प। हमरो काजपर जाइक अछि। और गप-सप्प दोसरो दिन हेतै। दुनू बाल-बोधकेँ सम्हारू।"

प्रभूनाथजी-

"दुखी, कनी आर बैसह। ई दुनू बौआ अनचिन्हार अछि। कनी बतिया लइ छी। नाओं बूझल रहत तँ समैपर समझा-बुझा देबै। नै तँ पोसो नै मानत। तँू तँ बुझबे करै छहक जे हमरासँ दुनू बौआकेँ खटपट तँ नै हएत मुदा हमर बुढ़ियाक सोभाव आ बेवहारकेँ तँ तूँ नीकसँ जनै छह, ओ मक्के लाबा जकाँ दिन भरि फटफटाइते रहै छथि। तेहेन झनकाहि अछि जे केकरोसँ पटरीए ने खाइ छै। दिन-भरि पूजे-पाठमे लगल रहैए, दिनक भोजन राति आ रतुका भोरमे पाड़न करैए। जँ कियो लागिओ-भीड़ीओ देतै तँ कहत जे हमर सभ किछु छुबा गेल। एकबेर के कहए जे तीन-तीन बेर नहाएत आ गंगाजलसँ शुद्ध करत। बेटो-पुतोहु आ पोता-पोती जखनि अबैए तँ देखिते बनरनी जकाँ लड़िते रहैए। तखनि हमर जिनगी केहेन अछि से बिनु कहने बूझि गेल हेबह।"

दुखीलाल-

"मालिक, ई तँ घरक बात छी। ओइमे हम किए दखल देब। मनुखो कोनो एक्के रंगक होइए। लोक अपन सुख-दुखक सृजन अपने करैए। अपजश दोसरकेँ लगबैए।"

बात समटैत दुखी दुनू बाल-बोधक दिस इशारा केलक।
प्रभूनाथजी पुछलखिन-

"बौआ, नाओं की छिअ?"

दुनू भाँइ एक्के स्वरमे अपन-अपन नाओं बाजल-

"बुधन-बेचन।"

प्रभूनाथ-

"मुँह सूखल छह। किछु खेबह?"

दुनू भाँइ बाजल-

"नै, पनिपिआइ कऽ लेने छी।"

प्रभूनाथजी-

"तोहर बापक कहब अछि जे दुनू भाँइ अहीठाम काज करत से करबहक ने?"

बुधन-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"हुँ।"

प्रभूनाथजी-

"अपन काज कहुना सभ करैए मुदा बीरानक काज कियो करैए आ कियो नै करए चाहैए।"

बुधन-

"हम अपन आ बीरानमे नै बुझै छी। काज करब।"

दुखीलाल बूझि गेल जे बात बढ़ि जाएत। बातकेँ सम्हारैत बाजल-

"मालिक गरीबक बेटाकेँ कथी परीक्षा लइ छिऐ। जे कहबै से करत।अबेर भऽ गेल काजपर जाइ छी।"

प्रभूनाथजी-

"कनी दरमाहा फरिआ लैह जे पछाति कोनो मुहाँ-ठुठी ने हुअए।"

दुखीलाल-

"मालिक, दरमाहा की हेतै। अहाँसँ रूपैआ दस हजार नेने छी। सालमे पनरह हजार हएत। पँच-पँच सए रूपैआ महिनाक हिसाबसँ दुनू भाँइक एक हजार भेल। पनरह महिनामे अहाँक रूपैआ फरिया जाएत, नै मानब तँ एक मास बेसीए खटि देत। हमरो खेत छूटि जाएत। ने अहाँकेँ दिअ पड़त आ ने हमरा। दुनू भाँइ अहींक दरबारमे खाएत-पीअत काज अहाँक अनुकूल करत।"

प्रभूनाथजी-

"ठीक छै मानि लेलिअ। तँू तँ हमरोसँ तेज निकललह। हम तँ बाल-बोधक फेरमे अबोध बनि गेलौं।"ООО

अबिसवास

कान्हिए नूनू बाबूक बेटीकेँ बिआह छी। नूनू बाबू बिआहक सरमजान सबहक ओरियानमे लगल छला। गिरहत आ सम्पन्न परिवार रहितो रूपैआक अभाव छेलनि। चारि लाख टाका, पाँच भरि सोना आ एकटा मोटर साइकिल देहेजपर बिआह फाइलन भेल छल। दुलहा इंजीनियरिंग कौलेजक छात्र। सुखी सम्पन्न परिवार। दुलहाक पिता मोहन बाबू एस.डी.ओ. औफिसक बाड़ाबाबू। नीक कमेने-खटेने छथि। तँए नूनू बाबू अपन बेटी सुचिताकेँ हुनके घरमे कुटमैती करैक निर्णए नेने छथि।

नूनू बाबू बहुत परियास करैत तीन लाख रूपैआ मोटर साइकिल, दू भरि सोना तिलकक समैमे चुकता कऽ देलनि। शेष तीन भरि सोना बेटीक गहना स्वरूप बिआहे दिन देब आ एक लाख रूपैआ जे बँकियौता रहि गेल ओ बेटीक नामे एल.आइ.सी. बीमामे जमा अछि। जे दू तीन मास पछाति मिलत सेहो चुकता कऽ देब। तिलक भेला पछाति बिआहक दिन ठेकल गेल। मुदा दुलहाक पिता मोहन बाबू बड़ लोभी। ओ मोने-मोन सोचलनि, पुतोहु जखनि हमर हएत तँ एल.आइ.सी.क रूपैआ आइ ने काल्हि हमरे हएत। बँकियौता रूपैआ बिआहसँ पहिने लऽ लेब तँ लाभमे रहब। मोहन बाबू बिआहसँ एक दिन पहिने समाद नूनू बाबूक घर पठौलनि जे हमर एक लाख टाका बँकियाहा अछि ओ रूपैआ चुकता करि दिअ तखने बरियाती जाएत नै तँ अहाँ जानू। नूनू बाबू समाद सुनिते जेना देहपर बज्जर खसि पड़ल। ओ सेचमे पड़ि गेला। होश सम्हारि मोहन बाबूसँ भेँट कऽ बड़ विनती केलनि। अखनि ऐ लेल माफी दिअ। हम बेटीबला छी। बहुत चीज-बौसक ओरियान करए पड़त। तैपर सँ बरियातीक सुआगतमे सेहो बहुत खरच हएत। मुदा मोहन बाबू नूनू बाबूकेँ एकोटा बात नै सुनलकनि, आ ने आँखिक नोर पोछलकनि। तखने नूनू बाबू बजला-

> "खैर, नै मानब तँ अहाँ बरियाती लऽ कऽ आउ, हम दरबज्जेपर बिअ◌ाहसँ पहिने रूपैआ बरियातीए घरमे चुकता करि देब तखनि बिआह करब।"

नूनू बाबू खेत भरना रखि रूपैआक ओरियान केलनि। बरियाती समैपर आएल। सबहक सुआगत भेल। दरबज्जेपर सबहक सोझहेमे एक लाख टाका दुलहाक पिता- मोहन बाबूकेँ चुकता कऽ देलनि। दुलहाक परिछन भेल, वरमालाक काज शुरू हएत तखने एकटा नव बातक चर्चा भेल जे दुलहा पहिने दुलहिनकेँ देखता। पसिन भेला पछाति ने बरमाला आ सेनूरदान हएत। ऐ बातसँ कन्याँ पक्षमे खलबली मचि गेल आ आक्रोश सेहो बढ़ि गेल। अन्तमे निर्णए भेल जे ठीक छै पहिने कन्याँ देख लेल जाउ। तखने आगूक काज हएत।

दुलहिन चित्रा तँ पहिनेसँ वरमाला लेल सजले छलि। एकटा कोठलीमे दुलहाकेँ लोकनियाँ संगे बजौल गेल। ओही कोठलीमे दुलहिन चित्रा सहेलीक संगे आएल। चित्रा इण्टर पास पूर्णिमाक चान सन सुन्नरि। दुलहा देखि कऽ मोने-मोन खुश भेला। किछु गप-सप्प सेहो भेलै। तखने चित्रा बजली-

> "की यौ दुलहाजी, हम अपनेकेँ पसीन भेलौं?"

दुलहा मुस्की मारि पीठे लागल बजला-

> "हँ, की हमहूँ अहाँकेँ...।"

चित्रा तुरन्ते जवाब देलक-

> "नै अहाँ हमरा पसीन नै छी। तँए आब ई बिआह हम किन्नौं ने करब। चित्राक ई निर्णए सुनि सखी-बहिनपा, माए-बाप, समाजक बुजुर्ग इत्यादि बहुतो गोटे समझेलकनि मुदा एकेठाम चित्रा जिद्द धेने रहलि जे ऐ वरसँ हम बिआह नै करब।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

दरबज्जा बरियाती-सरियातीसँ भरल छल। ई बात सुनिते लगले सनसना कऽ अगिलग्गी जकाँ चारू दिस सौंसे गाम पसरि गेल। बहुतो बुजुर्ग लोकनि दुलहिनक पिताकेँ बुझा-समझा कऽ कहलकनि मुदा चित्रा अपन दृढ़पर अरल रहलि। चित्रासँ कारण पूछल गेल। कहलक-

"जखनि दुल्हाकेँ अपन माए-बाप आ सर-समाज किनकोपर बिसवास नै छन्हि तँ ओ हमरापर बिसवास केना करता आ हम केना हुनकापर बिसवास करब। दोसर बात जे हिनकर पिताजी दहेजक खातिर जमीन आइज्जत बेचबा सकै छथि तखनि ओ हमरो बेचि सकैत छथि किने। तँए हम बीख पीब मरि जाएब मुदा एहेन अविसवासी आ दहेज रूपी दानवक बेटा संगे बिआह नै करब। ऐसँ नीक तँ हम ओहेन दुल्हा जे गरीबे किएक ने हएत, तिनकासँ करब, जे अपन इज्जतक संगे दोसरोक इज्जत करत।"

चित्रा सहेली संगे कोठलीसँ निकलि गेलि। दुल्हा आ लोकनियाँ सभकेँ ओही कोठलीमे बन्न कऽ ताला लगा आँगन आबि गेलि। बिआह नै भेल। ई खबरि रातिए भरिमे चौतरफा पसरि गेल। पंचैतीक बैसार भेल। पंच लोकनि बिआह हेबाक बहुत परियास केलनि मुदा चित्रा अपन संकल्पपर अडिग रहलि। अन्तमे जे दहेजक लेन-देन आ सुआगतक खर्च भेल रहै ओ सभटा आपस भऽ जाए। दुलहिनक पिता नूनू बाबू बजला-

"चारि लाख टाका, दू भरि सोना, मोटर साइकिल संगे सुआगतमे दू लाख टाका खर्च भेल अछि से सभटा आपस कऽ दिअ तखने हिनका सभकेँ छुट्टी भेटतनि। नै तँ हम कानूनक शरण लेब आ दुनू बापूतकेँ जहल कटेबनि।"

सभ पंचक विचार भेलनि। बात तँ उचिते ने नूनू बाबू कहै छथि। कोनो जबरन जुर्माना तँ नै...।

दुल्हाक पिता मोहनबाबू छह लाख टाका, सोना, मोटर साइकिल घरसँ मंगबा नूनू बाबूकेँ पंचक बिच्चेमे आपस कऽ देलकनि। तखनि हुनक बेटाकेँ कोठलीसँ बाहर निकालि देल गेल। जहिना आन गामक चोटाएल कुकुर नांगरि दबौने दुलकी दैत अपन गामक बाट पकड़ि सोझहे-सोझ जाइत रहैए तहिना सभ कियो विदा भेला।

चित्रा पिताक मुरझाएल मुँह देखि बाजलि-

"बाबूजी, अहाँ एक्को पाइ चिन्ता नै करू। हम मनुख संगे बिआह करब। पढ़ल-लिखल कम्मो रहत तइले एको पाइ चिन्ता नै। एही खातिर ने एते झमेल होइए। एक्को पाइ चिन्ता नै करू।"OOO

ISSN 2229-547X VIDEHA

डोमक आगि

जेठरति कक्काक मृत्यु सए बर्खक ऊपरे उमेरमे भेलनि। सौंसे गाममे सोग पसरि गेल। गाममे दलमलित हुअ लगलै जे आइ गामक मालिकक अन्त भेने एकटा युगक अन्त भऽ गेल। जेठरति कक्काक धाक जहिना गामक मानैत तहिना आदरो करैत। मुइला पछाति समुच्चा गामक लोक दाह संस्कारमे पँचकठिया दइले पहुँचल छल। भीड़ बहुत मुदा अखनि धरि अछियामे अ◌ागि ने पड़ल छल। लोक सभ थाहा-थाही ठाढ़, कियो बैसल कनफुसकी करैत आ किछु लोक निगुन भजन गबैत रहए-

"हंसा उड़ि गेलै भम्हरा बनि हे...।"

"सभ दिन होत ने एक समाना...।"

कियो ई गबैत-

"आया है सो जाएगा राजा रंक फकीर...।"

भिनसरसँ दुपहर भेल जाइत रहै। अखनि धरि लोक का◌ेन आशामे समए बीतबै छल, तेकर कोनो था-पता नहि छल। जखन बैसल-बैसल लोकक मन अगुताए लगलै, भूखसँ पेटमे बिलाइ कुदऽ लगलै। तखनि जा कऽ विलमक कारणक पता लगबऽ लगल।

मलिकपनाबला बात, के हिम्मत करत जे आगू भऽ पुछैले जाएत। अपनामे गुदुर-फुसुर करैत रहए। कियो आगू जेबे ने करैत रहए। तखने रौदी बाबा पहुँचला। पहुँचिते बजला-

"अखनि तक अछियामे आगियो ने पड़ल। किए एते अबेर भेल। धिया-पुता सभ भूखे लहालोठ होइए!"

सभ कियो रौदी बाबाकेँ कहलकनि-

"अहाँ बुढ़ो-पुरान छी आ गामक अनुभवी सेहो छी, से कनी झबदे पता करियनु जे...।"

अगुताएल रौदी बाबा लोकक बीचे-बीच टाटीपर राखल मुर्दा लग पहुँचला। ओइ ठाम जेठरति कक्काक परिवारक सभ लोकक संग पहुँचल कुटुम सभ अपनामे कहा-सुनी करै छल...।

लगमे जा रौदी बाबा जोरसँ पुछलखिन-

"यौ, अहाँ सभ लाशकेँ जरबैले एलौं हेन आकि गंगा सेबैले?"

जेठरति कक्काक जेठका बेटा- रूपचन्द- कहलकनि-

"दादा, सभ किछु तैयार अए, मुदा बौकू डोमक इन्तजारमे छी।"

रौदी बाबा पुछलखिन-

"से किए?"

रूपचन्द-

"लोक सभ कहैए जे असमसान घाटपर डोमक हाथक आगि कीनि लाशकेँ जरौलासँ मौक्षक प्राप्ति होइ छै तँए कनी बौकू डोमक बाट तकै छी।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

रौदी बाबा बजला-

“अहीले एते अबेर होइए आकि आरो कोनो बात छह? गाममे डोम, सभ कियो भोरसँ आएल अछि ओकरा कानमे खबरियो ने छै।”

रूपचन्द-

“नइ हौ काका, काल्हिए बौकू समधियौना गेल रहए, खबरि भऽ गेल छै। ओ जखने-ने-तखने पहुँचैएबला अछि।”

रूपचन्दक बात सुनिते लगमे बैसल शिवलाल काकाकेँ अनरगल लगलनि। तड़बाक लहरि मगज धरि पहुँच गेलनि। जोरसँ बाजए लगला-

“गामक एतेक बड़-बुजुर्ग जे आएल छथि ओ बुड़िबके छथि की! जखनि एते बुझै छहक जे डोमक हाथक आगि कीनिके ओइ आगिसँ मुखागिनी करब तँ पहिने डोमकेँ बजा लइतह। पछाति लोक सभकेँ बजैबतह। भिनसरसँ दुपहर भऽ गेल, सभ लोक भूखे-पियासे लहालोठ भऽ रहल अछि आ बौकू डोमक अखनो कोनो था-पता नइ छह!”

कनीकाल रहि फेर बजला-

“आइ-काल्हिक नव-नौतार सबहक नव-नव कानून। जखनि जे मनमे फुड़ैए सहए करऽ लगैए! नव-नव जोगीकेँ भरि देह टीक्का!”

शिवलाल कक्काक तमसाइत बोल सुनिते लग अबऽ लगल। सभकेँ होइ करवनि झबदे आगि पड़ै जे लोक पँचकठिया फेकि नहा-सोनाइले चलि जाएत। मुदा अखनो धरि बौकू डोम नहि पहुँचल।

सीताराम दास लग आबि बाजल-

“हौ रूपचन्द मालिक, कनीले एते लेट भऽ रहल छै हौ?”

बाजि सीताराम मने-मन सोचए लगल। जखनि बुझै छिऐ जे डोम समाजक लेल एते पैघ लोक छै, बिना डोमक आगिसँ लोककेँ मरलोमे मुक्ति नइ भेटै छै, तखन डोमकेँ एते निच्चा किए बुझै छिऐ...। जखनि कि जीबैतमे सभ डोमसँ छूबाइ छी, आ मुइलापर पैघ बुझै छी...। डोमो तँ अही समाजक लोक छी, मुदा गामसँ हटि कऽ वेचारा सभ गाममे बसैए। सभ कियो ओकरा अछोप बूझि आइ धरि लग बैसि खेनाइ तँ दूर जे बातो ने करैए। एक लग्गा फटिकेसँ पुछ-पाछ करैए...। ऐबेरमे कोन असोगरज लगि जाइए...।

रंग-बिरंगक बात सीताराम कक्काक मनमे नचऽ लगलनि। मिथिलाक सामाजिक पद्धतिक बनाबटपर धियान गेलनि। जाइते मन जेना आरो चौरफ वौआए लगलनि। बेवस्थाक जलियाएल रूप सभ सोझा अबऽ लगलनि। किछु बाजि नइ रहल छला।

तखने बौकू डोम हहाएल-फुहाएल आएल। बौकू डोमसँ कीनल जाएत तेकर मोल-जोल हुअ लगल। पुछलापर बौकू बाजल-

“जेठरति काका गामेक मालिक छला तँ हमरो मालिक। हमरा कोनो लोभ-लालच नइ अछि मुदा दान-दछिनामे जे देब से खुशी-शुखी दऽ दिअ।”

रूपचन्द एकटा चानीक सिक्का दऽ आगि कीनऽ आगू बढ़ला। तखने शिवलाल काका, रौदी बाबा आ सीताराम दास अपनामे विचार बजला-

"ई उचित नइ भेलऽ रूपचन्द। जेकरा खातिर भोरसँ दुपहर भऽ गेल, असमसान घाटपर लाश पड़ल अछि, तेकरा अहाँ एगो चानीक सिक्का...! जेठरति काका गामक मालिक छला, ओ एते अरजि देने छथि जे तीनो पीढ़ीमे नइ सधत। अपनो समांग बूझि बौकूकेँ जे देबै से दियौ, तखन ने बौकूओ अप्पन बूझत।"

सएह भेल। मुखागिनी भेला पछाति सभ काजक अन्त करैत सभ कियो आगूए तकैत विदा भेल। निगुन गौनिहारकेँ जेना बिसवास आरो बढ़ि गेलनि। पुन: गाबए लगला-

"सभ दिन होत ने एक समाना.... ।"OOO

राम विलास साहु-लक्ष्मिनियाँ, मधुबनी।

तीनटा लघु कथा- गंगा नहाएब/ डोमक आगि/ स्वर्गक सुख

गंगा नहाएब

कातिक मासक पुर्णिमा लगिचाएल। सालक तेरहम मास, बेसी पावनि-तिहार भेने हाथो खालीए, मुदा गाममे दलमलित होइए- गंगा नहाइले सिमरिया घाट जाएब।

ऐबेर पुरुखसँ बेसी जनानीए सभ गंगा नहाइ जाइले छाल छीलने। तीनू टोलक जनानी सभ गुदुर-फुसुर करैमे भरि-भरि दिन लगल। चनरदेव भोरे उठि गाए-बरदकेँ कुट्टी-सानी लगा धनखेती दिस विदा भेल कि बड़की भौजी आ सावित्री माए डेढ़ियापर आबि गेली। बड़की भौजी मुस्की मारि बजली-

"बौआ चनरदेव, सुनै छी गामक लोक सभ गंगा नहाइले जा रहल अछि। अहाँ नइ जाएब। कहिया पुर्णिमा छिऐ।"

चनरदेव दिन-तिथि गीनैत बाजल-

"पुरसुए पुर्णिमा छी। हमर तँ हाथे खाली अछि, तहन छुच्छे हाथ जाएब केना। ऐबेर नइ जाएब। गंगा मैया जँ ऐ साल निके-सुखे रखलनि तँ पौरुकाँ अबस्स जाएब।"

सावित्री माए बजली-

"चनरदेव, एहनो बात लोक बजैए! गंगा नहाइले तँ बिना जतरो-के-जतरा बनबैए, अहाँ किए मुँह मोड़ै छी।"

गंगा नहाइक चर्च सुनि एक्के-दुइए जनिजाति सभ ससरि-ससरि बहुतो आबि चनरदेवकेँ घेरि लेली। बड़की भौजी चौल करैत कहलखिन-

"यौ अहाँ सभ दिनक बहन्नाबाज छी, से बहन्ना छोड़ू जे हाथ छुच्छे अछि। अपनो चलू आ हमरो सभकेँ नेने चलू। रहल खर्चाक बात, हम तँ खर्चा देखबे ने करै छी। घरेसँ खेनाइ-पीनाइक समान बना लऽ लेब। रेलगाड़ीमे मेलाक भीड़ रहबे करत, टिकट कोनो लगबे ने करत। एक गड़ीसँ रातिए-राति जाएब आ दोसर दिन घर घूमि चलि आएब। ने कोनो घरक काज पछुआएल आ मंगनीमे गंगा नहा लेब। जखन मेलामे कोनो चीज-वौस कीनबे ने करब तखन खर्च बेसी किए हएत। अहूँ तँ सियार गुँहकेँ परबत बनबै छी।"

ISSN 2229-547X VIDEHA

बड़की भौजी गपक बखाड़ी खोलि चारू दिससँ चनरदेवकेँ गछारि लेली। चनरदेव सकदम भऽ गेल। किछु उत्तर नइ देलक। जनिजाति सभ समझि गेली जे चलैले तैयार भऽ गेल।

चनरदेव मने-मन सोचए लगल जे वेद-पुराणसँ लऽ कऽ साइयो पोथीमे गंगा स्नानक बड़ पैघ महत बतौने अछि। सतयुगसँ लऽ कऽ अखनि धरि अपन देशक लोक आ आनो देशक लोक गंगा नहाइए तँ चनरदेव किए पाछू रहत। हमहूँ किए ने लगले सूरमे बेड़ा पार भऽ जाइ।

एमहर भरिए दिनमे जनिजाति सभ खेनाइ-पीनाइक ओरियानमे लगि गेली। कियो अरबा चारक रोटी, अल्लूक भुजिया बनौलक तँ कियो परोठा-भुजिया, तँ कियो चूड़ा-मुरही, सतुआ-नोन आ मिरचाइक मोटरी बान्हि चलैले तैयार भऽ गेल।

पचीस-तीस गोटे सँझुके गड़ी पकड़ैले टिशन दिस विदा भेल। निरमलीसँ सकरी जाइत-जाइत भीड़क कारणे बुझू देहक मोलि छुटि गेल। मुदा कोनो धरानी भोरे-भोर सिमरिया टीशन पहुँच गेल। किछुकाल टिशनेपर अँटकै गेल आ अन्हरोखे गंगा घाट दिस सभ कियो विदा भेल। टिशनसँ घाट धरि चुटी जकाँ सत्तरि लगल लोक। केतौ कनीयोँ जगहे नइ जे ठाढ़ो भऽ लोक जीड़ाएत।

ससरैत-ससरैत कहुना गंगा घाट पहुँच गेल। दिसा-मैदानसँ आबि चनरदेव दतमनि करए लगल। गामेसँ साहोरक दतमनि अनने छेलए। मुँह-हाथ धोय बेरा-बेरी गंगामे नहाइ गेल। चोर उचक्काक कोनो कमी नइ, जँ एकेबेर सभ कियो नहाइले जेइतए तँ झोड़ा-झंटी लऽ पार भऽ जइतए।

लोक तँ गंगाइ नहाइत अछि पुन्य समझि कऽ मुदा पापो करैबला ओतइ बेसी होइए। सभ कोय नहा एक-एक डिब्बा गंगाजल भरि आनि ऊपर रखलक। पानि तेते घोर-मट्ठा भेल घिनाएल छेलै जे मुहोँमे नइ लइके मन होइत। घाटसँ हटि ऊपरमे एकटा मन्दिर छल। ओतइ एकटा चापाकल सेहो छल। सभ कियो धक्कम-धुक्का करैत कल लग पहुँचल। भूख-पियास सभकेँ लगल छेलै अपन-अपन खाएक निकाइल खा-खा पानि पीब, मोटरी-चोंटरी बान्हि लेलक।

सबहक विचार भेल जे गड़ीमे बड़ देरी छै तँए हम सभ ताबे मेला घूमि देखब। घूमि-घूमि गंगा घाटक मनोरम छबिक आनन्द लेब। सभ कियो घुमैत दछिन-पूब दिस गेल। जेतए खाली मुरदे जरै छेलै। लाश अधजरू होइ कि पानिमे धफारि-धफारि कऽ भँसा दइ छेलै। तइ बगलेमे एतेक घिनाएल छेलै जे थुको फेकनाइ अपराधे बुझै छल। नाक-मुँह मुनि सभ कियो पड़ाएल।

गंगा कातमे किछु दूर तक घाट बनल। नहाइक भीड़ ओरेबे नइ करैबला। तखन घुमैत सभ कियो राजेन्द्र पुल लग आबि गेल। जेना पुल कियो देखने नइ छल तहिना आँखि फारि-फारि पुलकेँ देखऽ लगल। घुमैत-फिड़ैत सभ थाकि-हारि गेल। कातिकक दुपहरियाक तिखर रौद भेने गरमी बढ़ि गेल। छाहरिक कोनो असे नइ। भिजलाहा वस्त्र माथपर राखि हाथसँ पकड़ि झाँह बना-बना हाथसँ पकड़ि सभ घुरिया कऽ बैसल।

बैसले-बैसल लोक सभ गंगा महात्मक चर्च करए लगल। जेकरा जे बुझल-सुनल आकि मनमे फुराइ से बजै छल। तखने बड़की भौजी आ कुपहावाली काकीकेँ रहि-रहि कऽ मन हौंरऽ लगलनि। बोकरि-बोकरि भरली। गंगामे करवनो मरलाहा जीव-जन्तुकेँ भँसैत जाइत देखै तँ करवनो मुरदाकेँ, तहिना चारूकात जे घिनाएल देखै से परपंचे ने होइ।

चनरदेवक मनमे गंगाक प्रति श्रद्धा-भक्ति आ आस्था छल ओहो कमए लगलै। कथा-पुराण आ साधु-संतक प्रवचनमे गंगा-महात्म पढ़ने-सुनने रहए ओ साँच छी की झूठ तइ ओझरीमे ओझरा गेल। तैयो चनरदेव मनमे सवुर बान्हि सोचए- जेतए चारू जुगमे लोक गंगा-महात्मकेँ मानैत आएल छथि, तेतए हमरा मानने वा नइ मानने की हएत। एतेक लोक जे गंगा नहाइए, की ओइ पुण्य-प्रतापे सभ स्वर्ग जाइए? आ जे गंगा नइ नहा पबैए ओ की नरक जाइए? तखन तँ केहनो कुकर्म करि लिअ आ गंगा नहा स्वर्ग चलि जाउ, सुकर्मक कोनो जरूरते नइ!

तही बिचमे सुगापट्टीवालीकेँ बड़बड़ैनी धेलकै। अकचकाइत वीरपुरवालीकेँ कहलक-

ISSN 2229-547X VIDEHA

"दीदी, एगो बात फरिछा कऽ बुझा दथु। जखन गंगा अपने एते घिनाएल अछि आ लोक सभ नहा कऽ अपन पाप धोइए तँ एतेक गंदकी आ पापकेँ गंगा मैया केतए जमा करैए?"

वीरपुरवाली काकी सुगापट्टीवालीकेँ समझबैत कहलखिन-

"देखै नइ छहक गंगा मैयाकेँ कोनो बखारी आकि गोदाम छै जे ओइमे जमा राखत।"

सुगापट्टीवाली-

"तखन गंगाजी अपना पेटमे सोन्हि–मोइन बना रखैत हेती।"

तैपर वीरपुरवाली बजली-

"हे हइ, एना अनरगल किए बजै छहक! गंगा मैया एहेन नइ छथि जे एतेक रास पाप आ गंदकीकेँ जमा करत। कथीले करत आ किए जमा करत। पाप आ गंदा तँ लोक करैए। जे करत से ने भोगत। ओ अपने ने पाप करैए आ ने गंदा। सभटा लोककेँ बाँटि दइए।"

सुगापट्टीवाली-

"से केना दीदी। एतेकालसँ छी, कहाँ किछु बँटैत देखै छी गंगाजीकेँ।"

वीरपुरवाली काकी बजली-

"हइ सुगापट्टीवाली, तोरा सनक सोझमतिया जनानी अहू जुगमे अछि से हम नइ बुझने छेलौं। एक गाममे जनमलह आ दोसर गाममे गिरथाइन बनल छहक से ओहिना। देखहक गंगा केना पाप आ गंदगीकेँ बँटै छथिन। जेते लोक गंगा नहा कऽ पाप धोइए ओ अपना-अपना मनक भरम दूर करैए। जखनि ओ डुबकी मारि डिब्बामे जल घरक खातिर भरैए, जइ जलसँ लोक तन-मन शुद्ध करैए तखने जेकर जे पाप केलहा रहै छै, तेकरा गंगा बाँटि दइ छै।"

बिच्चेमे कुपहावाली काकी आ बड़की भौजीकेँ विषयसँ भँसियाइत देखि सावित्री माए बजली-

"बौआ चनरदेव, हम तँ कान पकड़ै छी एहेन करम जिनगीमे फेर कहियो ने करब। ई तँ देखौंस केलौं। असल गंगा तँ सबहक मनेमे बसैए। जे कियो देखबे ने करैए। कहबीओ छै, मन चंगा तँ कठौतीमे गंगा। रहल गंगा नहा कऽ पाप धोअब आ पुण्य लूटब। तँ जखन पाप करबै ने करब तँ पुण्यक कोन काज अछि। जखन करमकेँ धरम बूझि करब तखन अधरम किए हएत। जे जेहेन करत तेकर फलो तँ तेहने ओकरा भोगए पड़त। हमरा बुझने ई सभटा मनक भरम छिऐ।"

गप-सप्पक बीच दुपहरिया बितल कि तखने घर जाइए गड़ी धुधुआइत आबि गेल। सभ कियो गड़ीपर चढ़ि विदा भेल। टिशनसँ चलि जखन गामक सीमा कात आएल तखने सभ कियो तीन-तीन बेर गंगाजी केँ गोड़ लागि बाजल जे एहेन दिन नइ करिहह जे दोसर बेर आब कहियो गंगा नहाइले जाए पड़ए। कान पकड़ि-पकड़ि जिनगी भरिक लेल गंगाजी सँ माफी मांगि लेकक।

डोमक आगि

जेठरति कक्काक मृत्यु सए बर्खक ऊपरे उमेरमे भेलनि। सौंसे गाममे सोग पसरि गेल। गाममे दलमलित हुअ लगलै जे आइ गामक मालिकक अन्त भेने एकटा युगक अन्त भऽ गेल। जेठरति कक्काक धाक जहिना गामक

ISSN 2229-547X VIDEHA

मानैत तहिना आदरो करैत। मुइला पछाति समुच्चा गामक लोक दाह संस्कारमे पँचकठिया दइले पहुँचल छल। भीड़ बहुत मुदा अखनि धरि अछियामे अागि ने पड़ल छल। लोक सभ थाहा-थाही ठाढ़, कियो बैसल कनफुसकी करैत आ किछु लोक निगुन भजन गबैत रहए-

“हंसा उड़ि गेलै भम्हरा बनि हे...।”

“सभ दिन होत ने एक समाना...।”

कियो ई गबैत-

“आया है सो जाएगा राजा रंक फकीर...।”

भिनसरसँ दुपहर भेल जाइत रहै। अखनि धरि लोक काेन आशामे समए बीतबै छल, तेकर कोनो था-पता नहि छल। जखन बैसल-बैसल लोकक मन अगुताए लगलै, भूखसँ पेटमे बिलाइ कुदऽ लगलै। तखनि जा कऽ विलमक कारणक पता लगबऽ लगल।

मलिकपनाबला बात, के हिम्मत करत जे आगू भऽ पुछैले जाएत। अपनामे गुदुर-फुसुर करैत रहए। कियो आगू जेबे ने करैत रहए। तखने रौदी बाबा पहुँचला। पहुँचिते बजला-

“अखनि तक अछियामे आगियो ने पड़ल। किए एते अबेर भेल। धिया-पुता सभ भूखे लहालोठ होइए!”

सभ कियो रौदी बाबाकेँ कहलकनि-

“अहाँ बुढ़ो-पुरान छी आ गामक अनुभवी सेहो छी, से कनी झबदे पता करियनु जे...।”

अगुताएल रौदी बाबा लोकक बीचे-बीच टाटीपर राखल मुर्दा लग पहुँचला। ओइ ठाम जेठरति कक्काक परिवारक सभ लोकक संग पहुँचल कुटुम सभ अपनामे कहा-सुनी करै छल...।

लगमे जा रौदी बाबा जोरसँ पुछलखिन-

“यौ, अहाँ सभ लाशकेँ जरबैले एलौं हेन आकि गंगा सेबैले?”

जेठरति कक्काक जेठका बेटा- रूपचन्द- कहलकनि-

“दादा, सभ किछु तैयार अए, मुदा बौकू डोमक इन्तजारमे छी।”

रौदी बाबा पुछलखिन-

“से किए?”

रूपचन्द-

“लोक सभ कहैए जे असमसान घाटपर डोमक हाथक आगि कीनि लाशकेँ जरौलासँ मौक्षक प्राप्ति होइ छै तँए कनी बौकू डोमक बाट तकै छी।”

रौदी बाबा बजला-

“अहीले एते अबेर होइए आकि आरो कोनो बात छह? गाममे डोम, सभ कियो भोरसँ आएल अछि ओकरा कानमे खबरियो ने छै।”

रूपचन्द-

“नइ हौ काका, काल्हिए बौकू समधियौना गेल रहए, खबरि भऽ गेल छै। ओ जखने-ने-तखने पहुँचैएबला अछि।”

ISSN 2229-547X VIDEHA

रूपचन्दक बात सुनिते लगमे बैसल शिवलाल काकाकेँ अनरगल लगलनि। तड़बाक लहरि मगज धरि पहुँच गेलनि। जोरसँ बाजए लगला-

“गामक एतेक बड़-बुजुर्ग जे आएल छथि ओ बुड़िबके छथि की! जखनि एते बुझै छहक जे डोमक हाथक आगि कीनिके ओइ आगिसँ मुखागिनी करब तँ पहिने डोमकेँ बजा लइतह। पछाति लोक सभकेँ बजैबतह। भिनसरसँ दुपहर भऽ गेल, सभ लोक भूखे-पियासे लहालोठ भऽ रहल अछि आ बौकू डोमक अखनो कोनो था-पता नइ छह!”

कनीकाल रहि फेर बजला-

“आइ-काल्हिक नव-नौतार सबहक नव-नव कानून। जखनि जे मनमे फुड़ैए सहए करऽ लगैए! नव-नव जोगीकेँ भरि देह टीक्का!”

शिवलाल कक्काक तमसाइत बोल सुनिते लग अबऽ लगल। सभकेँ होइ कखनि झबदे आगि पड़ै जे लोक पँचकठिया फेकि नहा-सोनाइले चलि जाएत। मुदा अखनो धरि बौकू डोम नहि पहुँचल।

सीताराम दास लग आबि बाजल-

“हौ रूपचन्द मालिक, कनीले एते लेट भऽ रहल छै हौ?”

बाजि सीताराम मने-मन सोचए लगल। जखनि बुझै छिऐ जे डोम समाजक लेल एते पैघ लोक छै, बिना डोमक आगिसँ लोककेँ मरलोमे मुक्ति नइ भेटै छै, तखन डोमकेँ एते निच्चा किए बुझै छिऐ...। जखनि कि जीबैतमे सभ डोमसँ छूबाइ छी, आ मुइलापर पैघ बुझै छी...। डोमो तँ अही समाजक लोक छी, मुदा गामसँ हटि कऽ वेचारा सभ गाममे बसैए। सभ कियो ओकरा अछोप बूझि आइ धरि लग बैसि खेनाइ तँ दूर जे बातो ने करैए। एक लग्गा फटिकेसँ पुछ-पाछ करैए...। ऐबेरमे कोन असोगरज लगि जाइए...।

रंग-बिरंगक बात सीताराम कक्काक मनमे नचऽ लगलनि। मिथिलाक सामाजिक पद्धतिक बनाबटपर धियान गेलनि। जाइते मन जेना आरो चौरफ वौआए लगलनि। बेवस्थाक जलियाएल रूप सभ सोझा अबऽ लगलनि। किछु बाजि नइ रहल छला।

तखने बौकू डोम हहाएल-फुहाएल आएल। बौकू डोमसँ कीनल जाएत तेकर मोल-जोल हुअ लगल। पुछलापर बौकू बाजल-

“जेठरति काका गामेक मालिक छला तँ हमरो मालिक। हमरा कोनो लोभ-लालच नइ अछि मुदा दान-दछिनामे जे देब से खुशी-शुखी दऽ दिअ।”

रूपचन्द एकटा चानीक सिक्का दऽ आगि कीनऽ आगू बढ़ला। तखने शिवलाल काका, रौदी बाबा आ सीताराम दास अपनामे विचार बजला-

“ई उचित नइ भेलऽ रूपचन्द। जेकरा खातिर भोरसँ दुपहर भऽ गेल, असमसान घाटपर लाश पड़ल अछि, तेकरा अहाँ एगो चानीक सिक्का...! जेठरति काका गामक मालिक छला, ओ एते अरजि देने छथि जे तीनो पीढ़ीमे नइ सधत। अपनो समांग बूझि बौकूकेँ जे देबै से दियौ, तखन ने बौकूओ अप्पन बूझत।”

सएह भेल। मुखागिनी भेला पछाति सभ काजक अन्त करैत सभ कियो आगूए तकैत विदा भेल। निगुन गौनिहारकेँ जेना बिसवास आरो बढ़ि गेलनि। पुन: गाबए लगला-

“सभ दिन होत ने एक समाना....।”

ISSN 2229-547X VIDEHA

स्वर्गक सुख

कोसी नदीक छीटपर बौकू सदाय खोपड़ी बना रहै छल। अगल-बगलमे मुसहर सभ सेहो काश-पटेरक खोपड़ी बना रहै छल। कोसीक कटनियाँ भेने मुसहरी टोल उजरि गेल।

माघ मासक समए। वस्त्रक अभावसँ जाड़क मारल बौकू ठिठुरैत घूर तपै छल। जखने घूरमे आगि जरेलक आकि बौकूक बेटा-बेटा सटि कऽ बैसि आगि खोरि-खोरि तापए लगल। पत्नी बलबावाली खोपड़ीसँ बकड़ी निकालैत जोरिसँ बजली-

“रातियों सिदहाक अभावमे सभ कोइ भुखले सुति रहलौं, आब दिनोमे बाल-बच्चा की खाएत। भूखसँ तरपि की बाल-बच्चाक संगे कोसीमे डुमि मरब।”

बौकू सदाय बाजल-

“भोरे-भोर एहेन अशुभ बात नइ बाजू। शीतलहरी भरि कोनो तरहेँ परान बँचाउ। परान बँचत तँ लाखो उपए करब। कनीको समए फरिच हेतै तँ खाइ-पीबैक जोगाड़ करब। एक तँ कोसी मैयाक मारल छी दोसर भगवानो बेमुख अछि।”

शीतलहरीक कोनो ठेकान नइ अछि मुदा भूख तँ समैपर लगिए जाइए। बेटा-बेटी रातिमे किछु ने खेलक। भिनसर होइते जोर-जोरसँ खाइले माँगए लगल।

बलबावाली पड़ोसीसँ दू सेर पँचि आनि घूरक आगिमे पका-पका बेटा-बेटीकेँ देलक। अपनो दुनू परानी खेलक। ऊपरसँ पानि पीब-पीब भूख मेटेलक।

कुहेस कमिते रौदक दर्शन भेल। बलबावाली पतिकेँ कहलकनि-

“दू दिनसँ सुखल रोटी आ अल्हुआ खा कऽ कोनो तरहेँ दिन कटलौं मुदा आइ भातक कोनो जोगाड़ करू।”

बौकू जाड़क कोनो परवाह नइ करैत धोतीक तर-ऊपरा ओढ़ैत बाजल-

“सब मिलि चलू परसा चौरीमे धानो लोढ़ब आ घोंघी-डोका सेहो बीछि आनब।”

साबीकेसँ परसा चौरी सिंगरा-बेलौड़ आ सतराज धानक नामी अछि।

चौरी पहुँचिते बौकू बेटा-बेटीकेँ कहलक-

“तूँ सभ घोंघी-डोका बीछि-बीछि छिट्टामे राखु आ हम दुनू गोरे धान बीछै छी।”

दुनू गोरे मिलि करीब पसेरी भरि धान लोढ़लक। बेटा-बेटी घोंघी-डोका छिट्टामे उठौलक।

जखन घर चलैले तैयार भेल तँ बौकूक पत्नी बजली-

“सुतैले एकेटा गोनरि अछि। किछ नार सेहो नेने चलू। बिछौना मोटसँ देबै। ”

नार बीछैकाल बौकू एकटा अढ़ैया भरिक काछुकेँ देखलक। देखिते बौकू काछुकेँ उनटौलक।

काछुकेँ उनटा देने भागल नइ होइ छै। उठा कऽ तौनीमे बान्हलक। धान आ नार पत्नीक माथपर देलक आ अपने बौकू घोंघी-काछु लऽ बेटा-बेटीकेँ संग केने विदा भेल।

घर पहुँचिते धान रौदमे पसारक। पड़ासीसँ उखरि-समाठ आनि धान-कुटि कऽ चाउर तैयार केलक। कौछक मासु बना रान्हलक। दोसर बर्तनमे भात रान्हलक। सभ कोइ संगे खेनाइ खाइले बैसल।

जाड़क समैमे सिंगरा-बेलौड़ आ देसहरिया धानक चाउरक लाल-लाल भात तेलगर आ स्वादिष्ट होइते अछि। तैपर सँ कौछक मासु अपने तेलसँ ऐंठल-ऐंठल, भातपर पड़िते भातो तेलसँ तर-बतर भऽ गेल। बौकू

ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'विदेह' १७८ म अंक १५ मइ २०१५ (वर्ष ८ मास ८९ अंक १७८) मानुषीमिह संस्कृताम्
ISSN 2229-547X VIDEHA

बमरोटिया हाथसँ भात-मासु बँटबो करैत आ खेबो करए। खेनाइ अधपेटा भेल तँ पानि पीब पियास मिझा नहमर साँस लैत बाजल-

“एहेन खेनाइ भागशालीए लोक खाइए। राजा-महराजाकेँ नशीव नइ होइ छै। ई खेनाइ देखिते केहेन-केहेन साधु-बबाजीकेँ सेहो मन ललिचा जेतइ।”

भोजन केलापर बौकू घूर पजारि देह टनकौलक। बलबावाली अरामसँ सुतैले ठेहुन भरि नार बिछौलक आ बाल-बच्चाक संग ओइपर सुतल। आ ऊपरसँ गोनरि ओढ़ि लेलक। कनीकालक पछाति सबहक देह गरमा गेलै।

बलबावाली हाफी करैत पतिकेँ कहली-

“औझका मेहनत साफल भेल। एहेन बिकट समैमे एहेन खेनाइ आ एहेन ओढ़ना बिछौना मिलल।”

नीक अवसर देख बौकू बाजल-

“ई छी स्वर्ग सुख। एहेन सुख रजो-रजवारकेँ सुन्दर महल आ सजल पलंगपर नइ भेटैए। अपना देखियो तर नारायण आ ऊपर गोविन्द छै आ बीचमे बौकूक परिवार अरामसँ सुतल छै। नइ कोनो डर-भर छै आ बगलेमे कासी मैयाक दिन-राति पहरा पड़ै छै।”

मिथिलाक माटिमे पसरल कहबी-

संकलनकर्ता- राम विलास साहु

1. एक तँ राकस दोसर नोतल।
2. कुमहरपर सितुआ चोख।
3. चट मंगनी पट बिआह।
4. मंगनी बरदक दाँत नै देखल जाइत।
5. खेत खाए गदहा मारि खाए जोलहा।
6. मुँह दुबराक कनियाँ सबहक भौजाइ।
7. बाबाजीक बेल हाथे-हाथे गेल।
8. पढ़ल सुग्गा बौक बनल।
9. हगबा मानए बघबाक डर।
10. डूमि कऽ पानि पीबी तँ एकादशीक माइओ ने जानए।
11. चोर-चोर मसिऔत भाय।
12. सड़लो भुन्ना तँ रेहुक दुना।
13. सखुआ सड़ै तँ खैर घमै।
14. पिआस ने जानए धोबी घाट, प्रीत ने जानए ओछी जाति।
15. नीन ने जानए टुटल खाट, चोर ने जानए गंगा घाट।
16. धर्मक सोरि पताल तक।
17. लोठगर देह सिलौटी लेने जाए, दलकल-दलकल नैहरा जाए।
18. बनियाँ काटे चिन्हारकेँ, कुकुर काटे अनचिन्हारकेँ।
19. खाइले लाइ नै, मुँह पोछैले मिठाइ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

20. छोट खिखिरकैं मोट नांगरि।
21. भोज भारी दालि खेसारी।
22. हाकीम छोट इजलाश भारी।
23. ऊपरसँ फीट-फाट निच्चाँसँ सिमरिया घाट।
24. मारि कम बपहारि बेसी।
25. अपने खाए दोसरकेँ लजाए।
26. कोढ़िया बरदक फूंफकार भारी।
27. हँसि कऽ बजै नारी तीनू कूल बिगाड़ी।
28. भाए-भैयारी भैंसी सींग जखने जनमल तखने भीन।
29. छोट गहबरमे नमहर पूजा।
30. भादवक ओल किछु खाए राजा किछु खाए चोर।
31. कान तँ सोन नै सोन तँ कान नै।
32. आन्हर गुरु बहीर चेला मांगे गुड़ दैत ढेला।
33. पाप नै पापी लजाए आँखि मुनि गंगा नहाए।
34. भजन कम हरिबोल बेसी।
35. चालि चली सादा निमहए बाप-दादा।
36. अण्डी-बघण्डी गाछ भेल सभ पाखण्डी महन्थ भेल।
37. निच्चाँसँ झर ऊपरसँ भर तेकरा नै कोनो डर।
38. माल केकरो कमाल करए कोइ।
39. बकरी करए पाैज तँ महत्तमानि कहै हमरे गड़ियबैए।
40. जुन्ना जरि गेल मुदा ऐंठन नै जरल।
41. आँखि बन्न डिब्बा गाइब।
42. भरिदिन मलहा पानिमे नहाइक फुर्सते नै।
43. जनमल बेटा मरल जाइ दोसर ले ओझाइ करए जाइ।
44. मालिककेँ लेबाने नै चोर करए दौनी।
45. छुतहर कहीं घरहर होइ।
46. अरजै काशी भोगए बिसनाथ।
47. देहातक दालि-भात शहरक सीता-राम।
48. बहिरा नाचए अपने ताल।
49. गज भरि नै फाड़ै थान भरि हारै।
50. तेल घटैत गेल नाच बढ़ैत गेल।
51. जे रोगीकेँ भाबए से वेदा फरमाबए।
52. डाक्टर लग गेने दुख ओझहा लग भूत।
53. नंगटे नहाएब तँ गारब कथी।
54. चोरबा कमाएल सभ खाए असगर चोरबा जहल जाए।
55. अनकर दालि-चाउर अनकर घी हमरा परसैमे लगैए की।

ISSN 2229-547X VIDEHA

56. चाउर-दालि केकरो घी परसै दलाल।
57. जड़, जमीन, जोरू जोरकें नै तँ केकरो औरकें।
58. चोरक आगू ताला की बेइमानक आगू केबाला की।
59. घसटन विद्या लपटन जोर नै किछु तँ थोड़बो थोड़।
60. कनफूकासँ चुल्हिफूका नीक।
61. गाए बिकाएल चरवाहि तरे।
62. पानिमे मछरी नौ-नौ कुटिया बखरा।
63. बैलक बैल गेल नौ हाथक पगहा संगे गेल।
64. धनि छी अहाँ धनि छी हम चलै छी अहाँ निहारै छी हम।
65. दस सेरे नै अगराइ दस समांगे अगराइ।
66. लगमे कचहरी घूस दऽ बेगार।
67. धूर्त्तसँ मूर्ख नीक।
68. मन हर्षित तँ गाबी गीत।
69. सौ चोट सोनारक एक चोट लोहारक।
70. खाइक मन अपना तँ गोसाइ देलक सपना।
71. बारह बापूतमे तेरह हुक्का तइमे उठै धक्कम-धुक्का।
72. पसेरी भरि नै खाए सेर भरिले रूसल जाए।
73. अनेर गाएक धरम रखबार।
74. केकर खेती केकर गाए कोन पापी रोमए जाए।
75. नमरी जाए तँ जाए मुदा दमरी नै जाए।
76. अपने करनी भेलौं बतरनी।
77. उ दिन कहिया एतै जे पुतोहु कहत बौंग्मरना।
78. गै मौगी तोहर अँगने केत्तेटा।
79. अपन कनही चल गै खोनही।
80. कनही गाएक भिन्ने बथान।
81. अन्हरा दुसए डिठराकें।
82. अपना ले लल साग तोड़ए चल।
83. घरमे भात तँ पड़ोसनी पकड़ए हाथ।
84. ऐ बेटबासँ नै पोताक आश।
85. हरबरी बिआह कनपट्टी सेनुर।
86. बड़-बड़ जन भाँसल जाए गदहा कहए केते पानि।
87. अपन हारल बहुक मारल कियो केतौ नै बाजैत।
88. झगड़ा ने दंग चुन-तमाकुल बन्न।
89. सत्तरि मूस खा बिलाइ हज करए जाइ।
90. दूधगरि गाएक लथार सहए पड़ै छै।
91. नदीकातक चास बैरनी लगक बासक कोन ठीक।

92. वर भेल बुड़िबक तँ जैतुक के लेत।
93. सात रार सात पेट सात बाभन एक पेट।
94. मनुख एक रंगा, जाति बहुरंगा।
95. मिथिला मैथिलीक झगड़ामे मैथिली डूमि गेल सवर्ण आबि सुरूज भेल।
96. बुड़िबक केर धन भेल तँ कबिलाहा कहीं उपास पड़ए।
97. रूसल कनियाँ दूध दूध-भात नै खाए डोका तिमल ले घुसकल जाए।
98. हालमे भेल बबाजी तँ दालिकेँ कहलक बैकुण्ठी।
99. लब लौकार बूढ़ बौकार।
100. आपे पुत्ता बापे खाए एक्को हिस्सा बाहर ने जाए।
101. सौ रत्ती सोना नै नीक एक रत्ती तकदीर नीक।

राम विलास सहु

टनका

हँसैत फूल
देखि भौंरा कहए
नित्य रहब
दु:ख-सुखक संग
सूतब अहीं अंक

बात सुनिते
फूल भेल प्रसन्न
झूला झूलब
पवन संगे-संग
रहब उपवन

रहब वन
पीअब मकरन्द
मधुर रस
डुमल अंग-अंग
सुख-दु:खक संग

ISSN 2229-547X VIDEHA

स्वर्ग मिथिला
जेहने माटि-पानि
तेहने गाम
खेत-खड़िहाँनमे
भरल धान-पान

अनपढ़कें
दी अक्षरक वोध
पोथी पढ़ि कऽ
ज्ञानी बनि ज्ञानकें
घर-घर बाँटतै

अज्ञानीकें दी
काज करैक ज्ञान
भूखलकें दी
दू रोटी भोर-साँझ
बनू नेक इंसान

आँखि मिला कऽ
सभ हाथ मिलबै
दिल मिलबै
नै कोइ, जौं मिलबै
दिलमे जग प्रेम

सभ जाितमे
छोट-छीन झगड़ा
अखनि धरि
जाति-सम्प्रदायमे
बँटल बौआइए

जन कल्याण
समाजक िनर्माण
शिक्षाक दान
देशक उत्थानमे

ISSN 2229-547X VIDEHA

सभक जरूरी छै

धन लगाबी
समाज कल्याणमे
होइत रहै
आगूओ हित काज
बँटैत रहू ज्ञान

दहेज रूपी
दानव पहिने नै
आइ सबल
बेकार चक्करमे
बेचि कऽ लूटाइ छी

भोरक तारा
उगल भुरुकबा
गमकै फूल
भोरु पहर घुमू
रहत चित्त खूश

माटिक घैला
पानि निर्मल करै
सोना नै शुद्ध
मन्दिर मन शुद्ध
ज्ञानी वाणि अमृत

आगि नै मुझै
हवासँ, मुझै दीप
प्यास नै मुझै
भरल सागरसँ
कूप मुझबै प्यास

पढ़ब नै वेद
भेद जानब केना
भूखल पेट
नै सूतब बिछौना

ISSN 2229-547X VIDEHA

खेत उपजै सोना

मठ मस्जिद
नै मिलै भगवान
वन घुमैत
नै मिलै कोनो देव
मन बसै भगवान

रोगीक रोग
दवासँ छुटैत छै
मन रोग नै
छुटै छै दवाइसँ
प्रेमसँ छुटै रोग

नेत्र दानसँ
जग इजोत होइ
जीवन दान
रक्तदान भूदान
सँ होइए भुदान

सफलताक
करू नीक तैयारी
राति अपन
जागि करू तैयारी
प्रयास राखू जारी

देशक खातिर
करब बलिदान
रक्षा करब
देशक छै कल्याण
काज छै ई महान

स्वर्गक सुख
नै चाही हमरा
दुखसँ मिलै
हरि दर्शन सुख

ISSN 2229-547X VIDEHA

सभ सुखक खान

मेहनतिसँ
मिलै धन अपार
आलस अछि
दुखक पैघ राह
करू नीक विचार

तीन बातसँ
राखक परहेज
मिठ बोलिया
चटगर भोजन
झूठसँ रहू कात

कन्याँदानसँ
जगमे करू नाम
काम महान
बड़ पैघ छै काम
होइ जग कल्याण

पंचतत्वसँ
बनल छै शरीर
अनमोल छै
ई जिनगीक गाड़ी
अन्त किए होइ छै

धानक बीज
उखाड़ै बोनिहार
गीत गबैत
करै धनरोपनी
सबहक खातिर

बच्चा कनैत
स्कूल जाइ खातिर
जरूरी अछि
कौपी-कलम-पोथी

ISSN 2229-547X VIDEHA

शिक्षाक छै जरूरी

दूध पीब कऽ
बच्चा पलै बढ़ैए
भविस बनै
उपकारी बनैत
देशक रक्षा करै

माटिक मुर्ति
हिलै-डोलै नै बोलै
श्रद्धा जगाबै
पान-फूल प्रसाद
सँ भक्तकेँ मनाबै

मानव तन
खातिर तप करै
छै ऋृषि-मुनी
दर्लभ छै देवोकेँ
नै भेटै छै ई तन

हाड़-मासुसँ
बनल छै शरीर
नाश्वर अछि
की भेटै छै तनसँ
मायामे फँसल छै

राजा सेवक
छै जनता मालिक
लोक बुझैत छै
उलटे सेवककेँ
अछि राजा मा◌िलक

गरीब लेल
जेल जुर्माना अछि
नेताक लेल
कालाधन खजाना

ISSN 2229-547X VIDEHA

जनता छै दिवाला

सभ अपन
नहि कोइ पराया
दुखक साथी
निभाबै जे दोस्ताना
अनमोल खजाना

मोती मालासँ
शोभा बढ़ैत अछि
कंठी मालासँ
हरि भजन होइ
कोन उपयोगी छै

मजदूरक
श्रमसँ बनै टुटै
घर-मकान
मालिक छै महान
श्रमिककेँ नै नाम

चान-सुरूज
अकासमे चमकै
लोक चमकै
छै अपने कर्मसँ
जग इजोत होइ

आगि जरैत
सभ देखैत अछि
दिल जरैत
नै देखैत कोइ
किए अन्तर होइ

पानिक बून
मिलि सागर बनै
सींचै धरती
प्यास मुझै सभकेँ

नै दाम दइ कोइ

मोट रोटीसँ
पेट भरैत अछि
नीक पोथीसँ
ज्ञान बढ़ैत अछि
दुनूकेँ छै मान

जरैत दीप
सभकेँ रोशनी दइ
मुदा अपने
अन्हारेमे रहै छै
उपकार करै छै

सेना देशक
रक्षा करैत मरैत
उपकारी छै
अपन रक्षा नै
देश गर्वीत करैत

चोरक माल
सभ मिलि कऽ खाए
उलटे चाेर
फाँसीपर चढ़ैए
संगे नै कोइ जाइ

नाचए बानर
भात खाए मदारी
बानल कहै
माल अछि केकरो
कमाल करै कोइ

पढ़ल सुगा
बोली छै अनमोल
बन्न पिंजरा
कैद रहि कहै छै

ISSN 2229-547X VIDEHA

अजादी केना होइ

गाछक फल
सभ खाइ जुराइ
गाछ नै खाए
कहियो आन फल
धर्म पालन करै

धान-पानसँ
मिथिलामे सम्मान
धोती-कुर्तासँ
गौरव पहिचान
स्वागत करै मखान

पकै फसल
कटनी दौनी होइ
कुटि पीस
बनै मधुर भोज
सभकेँ पेट भरै

बिना खेने नै
पेट भरैत अछि
नै देखने
नयन जुराइ छै
नै ज्ञान मुर्ख होइत

प्रेमक राह
जे चलै सुख पाबै
स्वर्ग पाबैत
सफल जीवनक
उत्तम फल पाबै

हरीन देत
सियारक गवाही
दुनू भागि कऽ
जंगल चलि गेल

ISSN 2229-547X VIDEHA

सजामे प्राण गेल

सौनक साग
भादवक दहीसँ
बँचल रही
आसिन-कातिकक
ओससँ बँचल रही

चंचल मन
चित्त घबराइ छै
जान जोखिम
पैर लड़खड़ाइत
राह नै देखाइ छै

चोर चोर छै
मसिऔत बनल
अधिकारी छै
पिसिऔत बनल
प्रजा साधू किए छै

राधा नचैत
वृन्दावन-गोकुल
कृष्णक बंशी
बजैत मथुरामे
मक्खन चोर कहैत

आमक डारि
झुलुआ झुलै छेलै
कोइली बोली
सुनि गीत गबैत
बौका हँसैत छेलै

बाग-वगिचा
लगबैत सिंचैत
आम-लताम
खाइत जीवैत छेलै

चैनसँ सुतै छेलै

रंगक धार
बहैत छै होलीमे
खूनक धार
बहै छै दुर्गापूजा
दीप सजै दीवाली

मोतीक माला
खरिदै धनवाला
हलुआ-पुड़ी
खाइ छै दिलवाला
दूध बेचै छै ग्वाला

खीरा छै हीरा
भोर पहर खाइ
नूनू लगा कऽ
साँझ पहर खाइ
खीरा तँ होइ पीड़ा

गंगाक पानि
छै अमृत समान
सागर मिलि
बनैए नोनगर
पानि करै छै हाि‍न

नार-पुआर
घास-पात भूसीकेँ
चिबा-खा गाए
बदलामे दै दूध
पी कऽ जीबै मनुख

देश अजाद
मुदा हम गुलाम
भूखल पेट
केना खुशी मनेबै

ISSN 2229-547X VIDEHA

स्वतंत्रा दिवस

हमर माए
गंगा सन पवित्र
नौ मास धरि
गर्भ पालन करै
मनक बात बुझै

पुरान अन्न
रोगीकेँ पथ्य पड़ै
पुरान लोक
समाजकेँ बँचाबै
पाबै छै ऊँच स्थान

दुभि घास छै
अमर शुभ
सभ पूजामे
शुभ काज करै छै
सम आँखि देखै छै

सभ महग
कोनो नै अछि सस्त
मुदा देशमे
खून-चून-बेचैनी
अछि सभसँ सस्त

खोजलासँ नै
भेटै छै भगवान
मन मन्दिर
बसै छै भगवान
जे पूजै छै महान

आँखि रहितो
अन्हर बनल छै
केना खोजत
ज्ञानक आँखि मानि

ISSN 2229-547X VIDEHA

करै जगमे हानि

पानि फलसँ
जिनगी बँचैत छै
बिनु काज नै
आगू चलै जिनगी
रूकिते अन्त होइ

विद्वानक छै
मिथिलामे खान
बढ़बै शान
करै ज्ञानक काम
पबै मान-समान

गरीबकेँ नै
मान अमीर करै
अमीर कहै
से गरीब करै छै
दुखे दुख सहै छै

मोह-मायामे
सभ फँसल अछि
उबरि नहि
सकै जगम कोइ
कर्म अधूरा होइ

धनक चिन्ता
मौतक कारण छी
चीतासँ चीता
चढ़ि भष्म बनि कऽ
माटिमे मिलैत छै

विद्याधन छै
अनमोल रतन
खर्चसँ बढ़ै
नहि छीनै छै राजा

ISSN 2229-547X VIDEHA

नै चोरबै छै चोर

फूलक मांग
देखैत खेतिहर
फूल लगबै
हाट-बजार बेचि
धन-कमबैत छै

आत्मा अमर
अविनाषी होइ छै
चोला बदलि
रूप रंग देखबै
रहस्य नै जनै छै

आगि जरैत
सभ देखैत अछि
मन जरैत
नहि देखै छै कोइ
बिनु प्रेम नै बुझै

फूलक रक्षा
काँट-पात करै छै
संगे रहै छै
सुखक संग फूल
काँट दुख दइ छै

कोइली बजै
अधरतिया उठि
प्रेमक बोल
प्रेमी छै बिछुड़ल
पिया नै भेल भोर

चिट्ठी-पतरी
केना लिखब पिया
भेजै नहि छी
खबरि ने सनेस

ISSN 2229-547X VIDEHA

अहाँ छी परदेश

खेलसँ राखू
सभ लोकनि मेल
स्वस्थ्य रहब
तन रहत चुस्त
मन रहत खुश

देशक लेल
खेलब सभ दिन
कठिन खेल
नाओंक लेल नहि
देशक गौरव ले

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/ संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

 ऐ साइटकेँ प्रीति झा ठाकुर, मधूलिका चौधरी आ रश्मि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल।५ जुलाई २००४ केँ http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

 

सिद्धिरस्तु